गुरुकुल शिक्षा: प्राचीन ज्ञान, आधुनिक विज्ञान और तकनीक की दिशा में

कानपुर,दिनांक 23-04-2025 को मर्चेंट्स चैम्बर ऑफ उत्तर प्रदेश, कानपुर के तत्वावधान में एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका विषय था "गुरुकुल शिक्षा : प्राचीन ज्ञान, आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी विकास"।

इस अवसर पर प्रमुख वक्ता आचार्य (डॉ.) दीपक कोइराला, सहायक प्राध्यापक, इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिक स्टडीज, गुजरात यूनिवर्सिटी, ने कहा कि प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में न केवल ज्ञान का संचरण होता था, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, नैतिकता, अनुशासन और समग्र जीवन दृष्टि का विकास भी होता था। यदि इस प्रणाली को आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के साथ जोड़ा जाए, तो भारत की शिक्षा प्रणाली दुनिया को एक नई दिशा दिखा सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि गुरुकुल प्रणाली को आधुनिक तकनीकी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ना एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है, जिससे एक ऐसी पीढ़ी तैयार होगी जो ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति और मानवता में संतुलन स्थापित कर सके।आचार्य दीपक कोइराला ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि गुरुकुल में शिक्षित बच्चे नौकरी मांगने के स्थान पर स्व-रोजगार, उद्यमिता, अनुसंधान पूरक जीवन शैली अपनाएंगे।

गोष्ठी का संचालन सुधींद्र जैन ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ. श्याम बाबू गुप्ता, अवध बिहारी मिश्र, मुकुल टंडन, अतुल कानोडिया, महेंद्र मोदी, सचिव और बड़ी संख्या में शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों, समाजसेवियों व प्राध्यापकों की उपस्थिति रही।

वक्ताओं ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गुरुकुल परंपरा के तत्वों को सम्मिलित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। आयोजकों ने यह भी संकेत दिया कि ऐसे कार्यक्रम भविष्य में भी आयोजित किए जायेंगे ताकि भारतीय शिक्षा के मूल तत्वों को पुनर्जीवित कर उन्हें 21वीं सदी के अनुरूप ढाला जा सके।

कार्यक्रम का समापन उत्साह और आशा के साथ हुआ कि गुरुकुल शिक्षा के मूल्यों को आधुनिक युग में पुनः प्रतिष्ठित किया जा सकेगा।